पंचम अध्याय

समकालीन उपन्यासों की दलित चेतना में नैमिशराय का योगदान

पंचम अध्याय

"समकालीन उपन्यासों की दलित चेतना में नैमिशराय का योगदान"

5.1. प्रास्ताविक :

आजकल 'दलित' शब्द को लेकर साहित्य के क्षेत्र में काफी चर्चा चल रही है | जो दबाया गया हो अथवा जिसे पनपने या बढ़ने न दिया गया हो वही 'दलित' है | दलितों की कहानी उतनी ही प्राचीन है, जितनी भारतीय संस्कृति है | सामाजिक, आर्थिक और मानसिक धरातल पर संपूर्ण 'दलित साहित्य' ऐसे ही उत्पीड़ित और शोषित लोगों की बेहतरी के लिए लिखा गया साहित्य है | इसलिए वह शब्द विलास नहीं, बल्कि आवश्यकता का साहित्य है | भारत में दलित चेतना के उभार के साथ हिंदी में दलित लेखकों की एक पूरी पीढ़ी तैयार हो गयी है | अब दलित साहित्य आंदोलन हिंदी साहित्य का प्रधान अंग बन चुका है | समाज का विशाल तबका जो अब तक मौन था, उसे बोलने की मनाही थी, अब वह बोलने लगा है, उसने जता दिया है कि हम भी मुँह में जुबान रखते हैं | परंतु सदियों से जो वर्ग इन्हें बोलने से वंचित रखे हुए थे, ये जुल्म और अत्याचार करने के अभ्यस्त थे, उन्हें यह गवाँरा नहीं हो रहा है | आज दलित लेखक पूरी परंपरा का मूल्यांकन कर रहे है | उनका यह मूल्यांकन इतना मौलिक और बुनियादी हैं कि परंपरा के प्रति अभ्यस्त संवेदना को झकझोर देनेवाला है | दलित लेखक एवं गैरदलित लेखक द्वारा लिखे गए दलित साहित्य पर प्रश्न निर्माण हो रहा है | अध्ययन के उपरांत मेरी यह मान्यता बनती है कि दलितों की पीड़ा का आख्यान दलित ही लिख सकते हैं | गैरदलित सहानुभूति एवं करूणा का दलित साहित्य लिख सकते हैं तो दलित लेखक स्वानुभूति एवं यथार्थपरक साहित्य का सृजन करते हैं | आज के दलित साहित्य में दलित जीवन की त्रासदी का प्रामाणिक आकलन है | इस आकलन के मूल में दलित जीवन स्थितियों को बदलने की चिंता भी है | आज सर्वत्र बोलबाला है कि अस्पृश्यता खत्म हो गई है | किंतु यदि हम गत चार-पाँच वर्षों के समाचार पत्रों के पन्ने उलट ही दें तो पता चलेगा कि अस्पृश्यता का प्रश्न समाप्त नहीं हुआ है | अस्पृश्यों पर होनेवाले अत्याचारों की संख्या देहातों में कई गुना बढ रही है | शहरों में अब दलित वर्ग कुछ अंशों में सुशिक्षित हो गया है | बडे पैमाने पर दलित वर्ग मध्यवर्ग तथा उच्च मध्यवर्ग में शामिल हो रहा है |

इसी कारण पुराने सफेदपोश वर्ग के मानसिक स्तर पर उसका संघर्ष उभर रहा है | छात्रवृत्तियों एवं आरक्षित स्थानों के कारण उन्हें सुस्थिति नसीब हुई है, इसमें संदेह नहीं है | किंतु कोई यह न समझे कि यह सुविधाएँ उसे पुराने सफेदपोश वर्ग की उदारता से मिली है | ये सुविधाएँ राष्ट्रीय आंदोलन और विशेषत: इस वर्ग की महान विभूति डॉ.अम्बेड़कर जी ने उन्हें प्राप्त कर दी है |

प्राचीन काल से दलित हाशिये पर था | आज दलित साहित्य शोषितों, पीड़ितों एवं उपेक्षितों को केंद्र में ला रहा है | दलित लेखकों का पुरातन धर्मग्रंथों, पुराणों एवं संस्कृति से संबंध भिन्न-सा है | उन्होंने दलित जीवन की यथार्थता को अनुभव के आधार पर स्पष्ट किया है दलित साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ निषेध, नकार एवं विद्रोह है। मानवी जीवन की असंगति की प्रतीति दलित लेखकों में चेतना जगा देती है | यह चेतना मूल्यगर्भित एवं प्रामाणिक है | वर्तमान समय में दलित लेखकों की चेतना, वास्तविक मानवी स्वातंत्र्य को अभिव्यक्त कर रहा है | फलस्वरूप महान साहित्य का सृजन कर रहा है | आज दलित हित के दृष्टिकोन को सामने रखकर जानने का प्रयास हो रहा है | भविष्य में किसी घटना का दलित जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेंगा और यदि वह प्रभाव हितकार नहीं है तो उससे बचने का रास्ता भी स्पष्ट हो रहा है | दलित लेखन पारदर्शी तथा दूरदर्शी है, जिसके कारण यह साहित्य सार्थक तथा प्रभावी हो रहा है | दलित साहित्य केवल अछूत, दलित, आदिवासी, दुखी-पीड़ित मानव समाज तक ही सीमित नहीं बल्कि समस्त मानव कल्याण की प्राप्ति की अपेक्षा करता है | दलित साहित्य किसी भी बात के प्रति पूर्वाग्रह रखकर उसका विश्लेषण नहीं करता | वह आर्थिक शोषण एवं सामाजिक विषमता के विरूद्ध क्रांति चाहता है | अब दलितों को अपने अस्मिता एवं पहचान का एहसास हो गया है | इस कारण दलित साहित्य अधिक निखर रहा है |

आज के दलित साहित्य की मूल प्रेरणा अम्बेड़करवाद है | डॉ.अम्बेड़कर केवल एक दार्शनिक नहीं थे, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों में भी सक्रिय रहे हैं | आज दलित साहित्य में समाज के सबसे कमजोर लोगों की जिंदगी की पीड़ा, आवाज और दर्द का सृजन होता है | दलित साहित्यकारों ने जीवन की यथार्थता एवं अपनी भाषा को साफ-साफ हमारे सामने रखने का प्रयास किया है | उनकी मान्यता है कि उनका जुड़ाव सीधे जीवन से हो और

बिना किसी संकोच से लोग उनकी बात को समझ सके | सदियों से पीड़ित और उपेक्षित यह वर्ग, जो वर्षों से नि:शब्द था, अब अपने जीवन के शब्दों को लेकर एक नयी भाषा और उत्तेजना को गढ़ रहा है | हिंदी में मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, संजीव, सत्यप्रकाश आदि का नाम चर्चा में आया है | इन्होंने साहित्य के पारंपारिक ढाँचे को तोडकर नयी परंपरा की शुरूआत की है | उन्होंने स्वातंत्र्य, बंधुभाव एवं न्याय के तत्वों को प्रधानता दी है |

हिंदू समाज के सवर्ण समुदाय ने ऐसी दृष्टि बना रखी है, जिसमें दलितों के प्रति उपेक्षा और विरोध ही नहीं, बल्कि घृणा के भाव मौजूद है | सवर्ण समुदाय के इस मानसिकता के प्रति अभिव्याक्ति दलित साहित्य में पनपी है | दलित साहित्य से प्रेरित होकर दलित समुदाय सवर्णवादी मानसिकता के शिकंजे से बाहर निकल रहा है | दलित लेखकों ने भोगे हुए यथार्थ, दर्द, पीड़ा, यातना और प्रताडना को स्पष्ट किया है | जन्मत: दलित होने पर एक आदमी को जिन आसंगों से गुजरना पड़ता है, उसका अनुभव सिर्फ एक दलित ही कर सकता है | मेरी यह मान्यता है कि दलित साहित्य से पूरे भारतीय समाज में जो जातिवाद, रूढ़िवाद, जड़ता और मानसिक पिछड़ापन है, वह सब घटेगा और मिटेगा | हिंदी में जो शीर्षस्थ साहित्यकार, आलोचक हैं वे कहीं प्राध्यापक, संपादक, पत्रकार हैं | ये लोग जिन संस्थानों से साहित्य के माध्यम से सामने आते है इन्होंने इस संस्थानों में दलित साहित्य का प्रवेश असंभव बना रखा है | उनकी यह मानसिकता बन चुकी है कि दलित साहित्य पूरे सामर्थ्य और शक्ति के साथ आयेंगा तो समूचे सवर्ण साहित्य को नष्ट कर देगा | डॉ.अम्बेड़कर के मानवतावादी विचार सवर्ण लेखकों के पेट में दर्द पैदा करते हैं | विशाल दलित, उपेक्षित और वंचित समाज अब अधिक दिन जातीय शिकंजे में नहीं रह सकता | वह उच्च शिक्षा, प्रेस और प्रकाशनों पर अपना अस्तित्व निर्माण कर रहे है | अब डॉ.अम्बेड़कर जी के सपनों का भारत सामने आ रहा है | दलित लेखक अपने तीक्ष्ण विवेक और पैनी दृष्टि से इस समाज के समस्त कुकर्मों और पाखंडों का खुलासा करके उसके इस कुरूप चेहरे का पर्दाफाश करते हैं | आज दलित लेखक एक ऐसे हिंदुस्तान का सपना देख रहे है जिसमें किसी भी प्रकार की कोई गुलामी न होंगी, जिसमें कोई किसी का जाति-धर्म के आधार पर शोषण नहीं कर सकेगा | मनुष्य एक जाति-कुल में जन्म लेने के कारण रौरव नरक जीने के लिए बाध्य होता है | अधीन रहना और

सेवा करना दलित वर्ग का यही कर्तव्य तय था | उसका गुण तथा कर्म कितना ही अच्छा अथवा महान क्यों न हो वह सामाजिक उपेक्षा का गहरा दंश भोगने के लिए अभिशप्त होता था | उन्हें शिक्षा से दूर रखा गया था | दलित साहित्यकारों ने मनुवादी वर्ण-व्यवस्था, गुलामी एवं शिक्षा के अधिकार से वंचित करने की प्रवृत्ति पर कठोर प्रहार किया है | आज दलित साहित्यकार अपने जीवन से अस्पृश्यता समाप्त करने के लिए समाज की पूरी व्यवस्था को उलटना चाहते हैं, क्योंकि भारतीय सामाजिक ढाँचा धार्मिक व्यवस्था पर टिका है | आज दलित लेखक कभी उपहास, कभी उपेक्षा, कभी घृणाजन्य आक्रोश व्यक्त कर रहे हैं | इस कारण पुराने गढ़ और मठ परेशान हैं | दलित रचनाकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी सामाजिक धरातल पर सहे गए अपमान को जिस तेवर के साथ अभिव्यक्त कर रहा है, जिस विद्रूप सच को व्यक्त करता है, वह पाठकों को सीधे प्रभावित करने में सक्षम है | अत: कह सकते है कि आज इतने कम समय में दलित साहित्य ने हिंदी में जो स्थान बनाया है, वह अपेक्षा से बेहतर है | वर्तमान दलित साहित्यकारों के अंदर शताब्दियों से संचित वह ऊर्जा है जिसका सही इस्तेमाल अब हो रहा है |

5.1.1. "छप्पर"

- जयप्रकाश कर्दम

जयप्रकाश कर्दम के 'छप्पर' उपन्यास का प्रकाशन सन 1994 में हुआ | लेखक ने इस उपन्यास में भारतीय समाज व्यवस्था में दलित वर्ग किस प्रकार यातना, प्रताड़ना सहते हुए जीवन संघर्ष करता है, ग्रामीण क्षेत्र में ठाकुर-जमींदार, सेठ-साहुकार दलित वर्ग पर अन्याय करते हैं इसका यथार्थ चित्रण किया है | उन्होंने इस उपन्यास में दलितों की समस्याएँ स्पष्ट करते हुए चेतना जगाने का प्रयास किया है | सुक्खा अपने लड़के चंदन को गुलामी से बाहर निकालना चाहता है लेकिन सवर्ण मानसिकता से बर्बर जिंदगी जिनेवाले सुक्खा का विरोध करते हैं | चंदन को अध्यापक की प्रताड़ना, यातना सहनी पड़ती है | चंदन उनसे संघर्ष करते उच्च शिक्षा प्राप्त करता है | वह दलितों में शिक्षा का महत्त्व स्पष्ट कर संगठित होकर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है | परिणाम स्वरूप दलितों में परिवर्तनवादी विचार जोर पकड़ने लगा था | वे गुलामी को

ठुकरा देते हैं तथा स्वाभिमानी जिंदगी बिताने की सोचते हैं | जिससे सेठ-साहुकारों का व्यवसाय चौपट हो जाता है | कमला, हरिया, रजनी के माध्यम से लेखक ने मानवतावादी विचारों को स्पष्ट किया है | समाज कार्य में कमला चंदन का साथ देते हुए शहिद हो जाती है | हरिया चंदन के हर संघर्ष में साथ रहता है | रजनी अपने पिता ठाकुर के अन्यायी मानसिकता का विरोध करती है तथा दलितों की सहायता करती है | परिणाम स्वरूप ठाकुर परिवर्तित होता है | वह जमीन और हवेली त्याग कर सामान्य जीवन व्यतीत करता है | जिससे भारतीय समाज प्रेरणा पा सकता है |

लेखक ने शहर की झोपड़पट्टी में गंदगी भरी जिंदगी जीनेवाले दलितों का यथार्थ चित्रण किया है | चंदन पढ़ने के लिए शहर आया तो हरिया उसकी हर तरह से सहायता करता है | गरीब जनता अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण अंधश्रद्धा की शिकार हो गयी है | बारिश न होने से अकाल, महामारी से लोग परेशान हो उठते हैं | इससे बचने हेतु संतनगर में यज्ञ का आयोजन किया जाता है | लेकिन चंदन इसका विरोध करते हुए यज्ञ को निरर्थक ठहराता है | वह लोगों से कहता है- "पत्थर के इन देवी-देवताओं या भगवानों की पूजा - अर्चना करने या उसको भेंट चढ़ने से कुछ भी होनेवाला नहीं है "[१] वह आगे कहता है कि इन यज्ञ-अनुष्ठानों पर किया गया खर्च जीवन सुधार के लिए किया जाए | आपके बच्चों का भविष्य बनाने के लिए स्कूल खोलें जाए | महिलाओं को सिलाई-बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाए |

चंदन जब शहर पढ़ने गया तो जैसे सारे गाँव में भूचाल आ गया था | ब्राह्मण-ठाकुर, सेठ-साहुकारों के कान खड़े हो गए थे | आज तक दलितों का कोई लड़का पढ़ने शहर नहीं गया | लेकिन सुक्खा चमार का बेटा पढ़ने शहर चला गया | काणा पंड़ित कहता है, "तू कितना भी बडा हो जा सुक्खा, लेकिन धर्मशास्त्रों से बडा नहीं हो सकता | तू अपमान करता है धर्मशास्त्रों का, वेद-वेदांगों का, नास्तिक |"[२] ठाकुर चंदन को अपने यहाँ क्लर्क बनाके रखना चाहता है | लेकिन सुक्खा ने जिंदगी में बहुत कुछ देखा और भोगा था | बाल यूँ ही धूप में सफेद नहीं हुए थे | वह सोचता है मैं मर जाऊँगा, भूखा प्राण त्याग दूँगा | सब कुछ बर्दाश्त कर लूँगा मैं,

1. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर, पृष्ठ क्र.18
2. वही - पृष्ठ क्र.32

पर चंदन को कभी भी इस नर्क में नहीं पड़ने दूँगा जिस नर्क में मुझे रहना पडा है | अपनी बात का न माना जाना ठाकुर हरनाम सिंह को अपमानजनक लगा था | उसी दिन ठाकुर साहब ने सवर्णो की पंचायत बुलायी | फैसला हुआ कि न तो सुक्खा को खेती-क्यारी में घुसने दिया जाए, न उसे लाई -पताई या मजदूरी के लिए बुलाया जाए | लेकिन जीवनभर घृणा, उपेक्षा और अपमान का शिकार होनेवाले सुक्खा में स्वाभिमान जाग गया था अब, अपनी छोटी-सी बेंडिया में ही मेहनत से कमाना शुरू किया उसने और एक भैंस पाल ली थी | ठाकुर जमींदारों ने रास्ते बंद किए तो क्या अपनी जिंदगी के रास्ते बंद नहीं होने दिए उसने | लेकिन पहले भैंस मरी और बाद में लगान न देने के कारण खेत से बेदखली किया गया तथा लाला ने गिरवी घर पर कब्जा कर लिया | जिससे गाँव छोड़कर दूसरे गाँव जाना पड़ा |

चंदन अपनी शिक्षा का उपयोग अपने समाज के उत्थान के लिए करना चाहता है | वह दलितों की मूक जबान को वाणी देना चाहता है | वह जुल्म और शोषण के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए फौज तैयार करना चाहता है | इसलिए वह दोपहर तक कालेज में जाता है और उसके बाद बच्चों को पढ़ाता है | एक दिन हरिया अपनी जीवन की व्यथा चंदन को बयान करता है | हरिया के मालिक तथा पुलिस हरिया पर अन्याय करते हैं | उसके कलंकित पुत्री को न्याय नहीं मिल सकता | इसलिए हरिया मालिक का खून कर देता है | उसे जेल हो जाती है, लेकिन कोई ठोस सबूत अदालत को नहीं मिला और वह जल्दी ही छूट जाता है | पिता को जेल होने से पुत्री गाँव छोड़कर भागी थी | इस प्रकार की व्यथा चंदन ने कमला के मुख से सुनी थी | चंदन उन दोनों अभागों को मिलाता है | जीवन की क्रूर यंत्रणाओं के शिकार तथा अपनी अपनी त्रासदी को झेलकर वर्षो बाद मिले पिता और पुत्री एक-दूसरे से लिपटकर खूब रोए | उन्हें बड़े सुख और संतोष का अनुभव हुआ |

ठाकुर साहब की एकमात्र बेटी, एकमात्र संतान रजनी थी | शहर में रहकर परिवर्तनकारी चेतना की पक्षधर बनी रजनी को ठाकुर साहब का विचार बहुत आपत्तिजनक लगता है | ठाकुर साहब ने सुक्खा के साथ जो सलुक किया उसके प्रति थोड़ा क्षोभ और आक्रोश था रजनी के मन में | वह ठाकुर साहब को समझाने का प्रयास करती है कि - "संविधान के अनुसार

देश के प्रत्येक नागरिक को सम्मान और स्वाभिमानपूर्वक जीने का हक है | प्रत्येक व्यक्ति को अपनी स्वेच्छा नुसार व्यवसाय चुनने और जीवन की दिशा निर्धारित करने की स्वतंत्रता है | यदि चंदन पढ़-लिखकर कुछ काबिल बनना चाहता है तो यह उसका संवैधानिक हक है, इस पर किसी को एतराज क्यों होना चाहिए |"[१] रजनी के मन में चंदन के प्रति बचपन से ही आत्मियता का भाव था | बचपन से ही एक ही कक्षा में साथ-साथ पढे थे रजनी और चंदन दोनों | जब रजनी को अपने पिता और उनके साथियों द्वारा गरीब सुक्खा के साथ की जा रही ज्यादती तथा उसके कारण का पता चला तो हर तरह से ठाकुर साहब को समझाने का प्रयास किया उसने |

चंदन ने पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ अपना स्कूल भी जारी रखा | वह सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगा | धीरे-धीरे चंदन का स्कूल दलित शोषित लोगों की सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बन गया और जल्दी ही इन गतिविधियों ने एक व्यापक आंदोलन का रूप ले लिया | जहाँ-जहाँ तक क्रांति और बदलाव की हवा पहुँची, वहाँ पर तथाकथित निम्न और असवर्ण लोगों ने न केवल सवर्णों की सामाजिक श्रेष्ठता को मानने से इन्कार किया बल्कि पूँजीवाद और सामंतवाद का भी खुलकर विरोध शुरू कर दिया | पैसे से पैसा कमाना ही धंधा है सेठ-साहुकारों का | लेकिन पैसे से पैसा तब कमाया जाता है जब कहीं न कहीं निवेश हो पैसे का | आय बंद हो जाने से जमा पूँजी खर्च होनी शुरू हुई और उनकी आर्थिक स्थिति डगमगाने लगी | क्रांति की हवा मातापुर तक आ पहुँची थी | इस हवा के कारण काणे पंड़ित का धन्धा चौपट हुआ, दुर्गादास के व्यवसाय को झटका लगा और ठाकुर साहब की सारी खेती-बाड़ी चौपट हो गई | उनकी अपनी ही बेटी, जिसकी हर इच्छा और सुख के लिए वह सदैव कुछ भी करने लिए तत्पर रहते थे, वह उनकी उपेक्षा कर रही थी | इससे उनको दुख हुआ लेकिन वह कुछ नहीं कर सकते थे | उन्होंने स्वयं को लाचार और निरूपाय महसूस किया |

ठाकुर साहब सोचते थे कि जिन लोगों का उन्होंने शोषण किया है, जिनको दबाया-कुचला गया है, समर्थ होने पर वे लोग उनसे जरूर घृणा करेंगे और अपने साथ हुए अन्याय और अपमान का बदला लेंगे | किंतु उनको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि किसी ने उनके

१. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर, पृष्ठ क्र.64

साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया | प्रारंभ में जरूर कुछ लोगों ने उनके प्रति उपेक्षा का भाव जताया था किंतु जब चंदन गाँव में आया तो उसने लोगों को समझाया था - "हम व्यवस्था के विरोधी है, व्यक्ति के नहीं |"[1] इस कारण लोग ठाकुर साहब के साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार करने लगे थे | अपने प्रति लोगों का यह व्यवहार देखकर उनका मन उनके प्रति कृतज्ञता और सम्मान से भर गया और स्वयं से ही घृणा और ग्लानी होने लगी थी उन्हें | लोगों का सामना करने की हिम्मत उनमें नहीं थी | वह इस घुटन भरी जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए खुदखुशी करना चाहते थे | लेकिन सुक्खा उन्हें बचा लेता है | सुक्खा इतना अत्याचार सहने के बाद भी सहृदयता का व्यवहार करता है | ठाकुर साहब को सुक्खा के समक्ष अपना समग्र अस्तित्व बहुत बौना सा लगता है |

अगले दिन गाँव की पंचायत बुलायी गयी | ठाकुर साहब ने केवल अपने गुजारे के लिए थोड़ी-सी जमीन अपने पास रखकर सारी जमीन गाँव के गरीब और खेतीहिन मजदूरों में बाँट दी और दूसरे लोगों की तरह अपनी हथों से खेतों में काम करना शुरू कर दिया | बाद में हवेली का भी त्याग कर दिया और एक छोटे मकान में रहना शुरू कर दिया |

एक दिन चंदन जनसभा को संबोधित करके मंच से उतर रहा था | अचानक समाज विरोधी और दूषित मानसिकता वाले व्यक्ति ने चंदन को जान से मारने की नीयत से सिर पर लाठो से प्रहार किया | चंदन के सिर पर लाठी आते देखी कमला ने तो चीते की सी फुर्ती से एक झटके से चंदन को धक्का दिया | चंदन तो बच गया लेकिन लाठी सीधी कमला के सिर पर आकर पड़ी और इससे पहले की कोई कुछ समझ पाता कमला ढेर हो चुकी थी | हालाँकि हमलावार को तुरंत पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया गया और समाज के सभी वर्गो के लोगों ने इस घटना की निंदा की | चंदन ने कमला की मृत्यु पर एक शोक-सभा आयोजित की | रजनी भी शोक स्भा में उपस्थित थी | शोक-सभा के बाद बहुत देर तक बातें हुई उनकी | सब बातों के पश्चात रजनी ने चंदन से कहा समानता और सामाजिक न्याय की जो ज्योति तुमने जलायी है और दूर-दूर तक उसका आलोक पहुँचा है, सामाजिक जीवन में व्याप्त असमानता और न्याय का प्रकाश फैल रहा है | हालाँकि सदियों से चली आ रही व्यवस्था को एक दिन में, महिने में, साल में

1. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर, पृष्ठ क्र. 109

बदला नहीं जा सकता | संपूर्ण बदलाव के लिए समय काफी चाहिए | लेकिन तुम्हारे प्रयासों से बदलाव की प्रक्रिया शुरू हुई है और दिन-प्रतिदिन यह प्रक्रिया तेज होती जा रही है | लोगों में अपने उत्थान और विकास के प्रति चेतना आ रही है और समाज के दूसरे तबकों के लोग भी यह बात अच्छी तरह समझ चुके हैं कि दलितों को समानता और भाईचारों का दर्जा देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है | यहाँ तुम अपने दायित्व को अंजाम दे चुके हो चंदन और तुम्हारी पढ़ाई भी पूरी हो चुकी है | अब तुम्हें गाँव की ओर ध्यान देना चाहिए | इसलिए अच्छा होगा कि मातापुर चलो अब तुम | उस समय कमला के बच्चे का प्रश्न सामने आया | रजनी ने कहा कि - "कमला के बच्चे को भी अपने साथ ले चलेंगे हम | पिता का प्यार तुम देना और माँ का प्यार मैं दूँगी उसे | अनाथ नहीं रहेगा वह |"[१] दोनों एक-दूसरे की भावना को समझ गए थे |

❖ **निष्कर्ष :**

अत: कहना होगा कि लेखक ने दलितों की समस्याओं को स्पष्ट करते हुए चेतना जगाने का प्रयास किया है | समाज में अज्ञान, अंधश्रद्धा पर प्रहार करते हुए समाज में जागृती लाने का कार्य किया है तथा ईश्वर के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है | चंदन के माध्यम से अंम्बेड़करवादी विचार उभरकर आए हैं | ठाकुर साहब, पंड़ित एवं दुर्गादास आदि सवर्णों के अत्याचार को स्पष्ट किया है | सुक्खा को संघर्षशील नायक के रूप में चित्रित किया गया है | हारेया, कमला और रजनी के माध्यम से मानवतावादी विचारों को स्पष्ट किया है | लेखक ने ठाकुर साहब में परिवर्तन दिखाकर भारतीय समाज में मानवधर्म तथा मानवीयता की स्थापना करना चाहते हैं |

5.1.2. "धार"

- संजीव

संजीव का 'धार' उपन्यास हिंदी साहित्य जगत में एक नयी उपलब्धि है | इस उपन्यास में पूर्णत: अछूते समाज के जीवन प्रणाली को उद्घाटित किया है | इसमें बिहार के संथाल परगना में कोयला खदानों में काम करनेवाले मजदूरों का यथार्थ चित्रण हुआ है | इसमें

1. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर, पृष्ठ क्र. 119

मजदूरों की समस्याएँ, उनमें उभरती चेतना, पूँजीवादी व्यवस्था, अवैध खनन, राष्ट्रीय माफिया गिरोहों एवं पुलिसों का आतंक आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है | इस उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य यह है कि मजदूरों का पूँजीपतियों द्वारा शोषण एवं उभरती चेतना उनको प्रगति के राह पर ले जाती है | इस उपन्यास की प्रधान पात्र मैना है | वह पूरी तरह से जागृत नारी है | वह अपना पूरा जीवन आदिवासी मजदूरों के लिए संघर्ष करते बिताती है | संथाल परगना के आदिवासी मजदूरों का पूरा जीवन कोयला खदानों पर आधारित है | परंतु महेन्दर बाबू, पंड़ित, पुलिस, माफिया गिरोहों आदि उनका शोषण करते हैं | इस कारण उनका पूरा जीवन अभावग्रस्त एवं संघर्षमय दिखाई देत है |

संजीव जी ने बाँसगड़ा अंचल के कोयला खदान मजदूरों का जीवन संघर्ष का अंकन किया है | उनका गंदगी भरा जीवन, उनकी गंदी बस्तियाँ, प्रदूषित वातावरण आदि को झेलते हुए नारकीय जीवन जीते हैं | पूँजीपति वर्ग कोयला मजदूरों का खून चूसकर लाखों कमाते हैं | पर दिन-रात कोयला खानों में काम करनेवालों को रोटी के लाले पड़ जाते हैं | लेखक ने संथाल परगना के गरीब मजदूर, गंदगी भरे बच्चे, अभावग्रस्त जीवन, नारी देह व्यापार, अनैतिक विवाह, बालविवाह, अंधश्रद्धा, जनगुरू(ओझा) का अन्याय एवं पूँजीपति द्वारा शोषण का यथार्थ अंकन हुआ है |

संथाल परगना के कोयला मजदूर पूँजीपतियों के अत्याचार से अत्यधिक त्रस्त हैं | जानवरों से बदतर जिंदगी जीने के लिए वह बाध्य है | उन्हें उनकी मजदूरी का उचित मूल्य भी नहीं दिया जाता है | उनके श्रम के बल पर पूँजीपति वर्ग और भी धनवान होता जा रहा है | लेकिन उन्हें फटेहाल जिंदगी जीने के लिए विवश किया है | अवैध कोयला खदानों में जमीन धसने पर तथा दुर्घटना घटने पर अनेक मजदूर जिंदा दफन होते हैं तथा जो जख्मी है उन्हें भी अस्पताल लाने के बजाए वहीं दफनाया जाता हैं | पुलिस, माफिया गिरोह एवं पूँजीपतियों के कारण आदिवासियों को रौरव नरक की जिंदगी जीने के लिए विवश किया है | इस प्रकार पूँजीपतियों में राक्षसी प्रवृत्ति का पर्दाफाश संजीव जी ने किया है |

महेन्दर बाबू की तेजाब की फैक्टरी थी | इस फैक्टरी के पानी से आदिवासी बीमार पड़ रहे थे, जानवर मर रहे थे | मैना की माँ इस फैक्टरी का विरोध करना चाहती है | इसलिए महेन्दर बाबू जनगुरू (ओझा) को दो सौ रूपये देकर बंदोबस्त करने को कहता है | परिणाम स्वरूप ओझा मैना की माँ को ड़ायन घोषित कर देता है | जिस कारण गाँववाले उसे मार-मारकर गाँव से बाहर निकालते हैं | मैना के पिता टेंगर और पति फोकल को अपने पक्ष में कर मैना का भी विरोध किया जाता है | लेकिन मैना निर्भयी है | वह समझती है - जब मन में दृढ़ आत्मविश्वास और पवित्र संकल्प हो तभी यह निर्भयता प्राप्त होती है | वह संथाल मजदूरों को संगठित करके यथार्थ को स्पष्ट करती है | परिणाम स्वरूप तेजाब की फैक्टरी बंद हो जाती है |

अविनाश शर्मा और मैना कोयला मजदूरों में क्रांति लाना चाहते हैं | उनपर मार्क्स वाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है | मैना महेन्दर बाबू के ठेले पर काम करने का इन्कार करती है | वह अपना अलग ठेला बनाती है | लेकिन महेन्दर बाबू के कहने से पुलिस उसे नाहक परेशान करते हैं | फिर भी वह निराश नहीं होती | उससे प्रेरित होकर कोयला मजदूर अपना-अपना ठेला अलग लगाकर तथा कोयला बेचकर उदर निर्वाह करते हैं | जिससे महेन्दर बाबू का धन्धा चौपट हो जाता है | वे पुलिस की मदद से संथाल मजदूरों की धरपकड़ करते हैं | लेकिन ऐसा लग रहा था कि उनमें साम्यवाद जोर पकड़ रहा हो | उन्होंने फिर से संगठित होकर जनखदान का काम शुरू किया | वहाँ कोई छोटा और कोई बड़ा नहीं था | वहाँ सब बराबर थे | सब काम करनेवाले मजदूर मालिक थे | अविनाश शर्मा और मैना इन पूँजीपतियों के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए मजदूरों की सहायता करते हैं | मजदूरों में चेतना जगाने का प्रयास करते हैं | शर्मा बोले - 'मैं गाँव-गाँव यह सारी बातें सभी से कहता हूँ कि तुम भोले हो, अपने आदिम संस्कारों से जकड़े हुए हो | सभ्यता के फैलाव से उठकर कोने में सिकुड़ते जाने से क्या होगा ? तुम्हें समय के बदलाव को समझते हुए कुछ जड़ संस्कार छोड़ने होंगे और अपना छीना हुआ हक वापस लेना होगा |"[1] यह व्यक्तिगत स्वार्थ के खिलाफ समुहिक स्वार्थ की लड़ाई है | उन्होंने सामुहिकता कष्ट से चंद दिनों में जनखदान को प्रगतिपथ पर ले आए |

---

1. संजीव - धार, पृष्ठ क्र.35

लेकिन उन्हें किसी की सहाय्ता नहीं मिलती | उन्हें सबका मुकाबला करना पड़ता है | पूँजीपति, भ्रष्ट अधिकारी, पुलिस, माफिया गिरोह एवं प्रशासकीय व्यवस्था के कठिन अवरोधों से गुजरना पड़ता है | मैना इन मजदूरों का नेतृत्व करती है | उसे पूँजीवादी अमानवीय मानसिकता से सदैव संघर्ष करना पड़ता है | उन्होंने सामुहिकता से यह निर्णय लिया था कि जनखदान से जीवनयापन के लिए जरूरी कोयला लेकर बाकी कोयला राष्ट्र के हवाले किया जाएगा | उन्होंने कोयला राष्ट्र को समर्पित करने के लिए पहाड़ सा कोयला संचित किया | इस कोयले के संदर्भ में सरकार को शर्मा जी ने कई बार लिखा | मगर कोई जवाब नहीं देता | पूँजीवादियों से पुलिस और अधिकारियों को मुँहमांगी राशी मिलने से महेन्दर बाबू के अवैध कार्य में सहायता करते हैं तथा आदिवासी मजदूरों को नाहक परेशान करते हैं | महेन्दर बाबू पुलिस के बल पर जनखदान बंद करना चाहते हैं | पुलिस फौज आने पर मजदूर उन्हें घेर लेते हैं, जिस कारण उन्हें निराश होकर लौट जाना पड़ता है | सभी मजदूर लाल झंडे के नीचे आकर संघर्ष करना चाहते हैं | पार्टी के महासचिव जयदेव कहते हैं - "हम मजदूरों की कोई जाति नहीं होती, हमारा कोई धर्म नहीं है, हमारी लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक इस धरती से हर तरफ का शोषण गैर बराबरी, गुलामी और नाइन्साफी मिट नहीं जाती |"[1] इस साम्यवादी पद्धति से कोयला खदान मजदूरों में चेतना निर्माण हो जाती है |

महेन्दर बाबू परंपरा से इन मजदूरों पर रौब जमाते आए थे | आज उन्हें कोई सलाम नहीं कर रहा है | वह इन मजदूरों को अपने काबू में रखना चाहते हैं | इसलिए बबन की सहायता से रूपयों के बल पर सेना बना लेते हैं | उसमें माफिया, जेल के गुण्डे, आवारा लोगों को भर्ती किया जाता है | महेन्दर बाबू के कहने पर इस सेना से जनखदान के मजदूर लोगों पर हमला कर देते हैं | लेकिन जनखदान के मजदूर पूर्ण तरह से तैयार थे | उन्होंने उनका डटकर मुकाबला किया | इसमें मजदूरों की जीत हो गयी |

सांसद के सदस्य वहाँ काम देखने आते हैं | उन्हें यह अच्छा काम रास नहीं आता | उन्हें कहीं खोट चाहिए थी, क्योंकि उनको घूस खाने को मिले | लेकिन कहीं खोट न

---

1. संजोव - धार, पृष्ठ क्र . 163

मिलने से क्रोधित होते हैं | जनखदान का काम शुरू होने से मजदूर वहीं काम पर आते हैं | इस कारण महेन्दर बाबू का खदान का काम बंद हो जाता है | साथ ही घर में भी मजदूर नहीं मिल रहे थे | महेन्दर बाबू तथा अन्य सहकारी जनखदान बंद करने के उपाय ढूँढ़ रहे थे | एक दिन सरकार ने जनखदान को अपने कब्जे में ले लिया इसका राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था | लेकिन राष्ट्रीयकरण सिर्फ जनखदान का होता है, खाजगी खदानों का नहीं होता | उनके सब कार्यों पर बुल्डोजर फिराया जाता है | पूँजीपतियों के चक्रव्यूह के परिणाम स्वरूप मजदूरों की चेतना को कुचला जाता है | जिसे गर्भ मानकर वे सपने संजोते आए थे, वह एक आघात से गर्भपात में बदल गया | इस व्यवस्था के बुल्ड़ोजर ने जनखदान को अस्त व्यस्त कर दिया | अनेक गरीब आदिवासी कुचले गए तथा चोर समझकर जेल में बंद किए गए | मैना उसका विरोध करके बुल्ड़ोजर के सामने खड़ी होती है | इस व्यवस्था का बुल्ड़ोजर चोरों की खदान को धस्त नहीं कर सका, लेकिन मैना को रौंदते हुए चला गया | लेकिन मैना की मृत्यु नहीं हुई | उसकी चेतना और संघर्ष आज भी मौजूद है | "वह मरी नहीं, मर सकती ही न्हीं,...जहाँ- जहाँ अंधेरे में जुगनू आपको चमकता दिखाई दे, ईमानदारी से पुकारिये, मैना! कान साधे रहिए बहुत गहराई से जवाब आएगा, हूँ ऽऽ |"[१] इस प्रकार मैना के माध्यम से संर्जीव ने साम्यवादी विचारधारा को स्पष्ट किया है तथा आदिवासी कोयला खदान मजदूरों का यथार्थ चित्रण किया है |

❖ निष्कर्ष :

कहना सही होगा कि संजीव जी ने संथाल परगना में कोयला खदानों पर काम करनेवाले मजदूरों का यथार्थ चित्रण किया है | जो अछूता समाज परंपरा से हाशिये पर था, उन्हें केंद्र में लाने का प्रयास किया गया है | पूँजीवादी मानसिकता, सरकारी अधिकारी, पुलिस, माफिया आदि का पर्दाफाश किया है | किस प्रकार अछूता समाज रौरव नारकिय जिंदगी जीने के लिए बाध्य है, इस्को उजागर किया है | मैना मजदूरों में किस प्रकार चेतना निर्माण करती है तथा अंत में उन मजदूरों के न्याय के लिए शहिद होती है इसे संजीव जी ने बड़ी मार्मिकता से अंकित किया है |

---

1. संजीव - धार, पृष्ठ क्र.210

5.1.3. "परिशिष्ट"

- गिरिराज किशोर

गिरिराज किशोर जी का 'परिशिष्ट' उपन्यास दलित छात्रों के संघर्ष एवं संकल्प की महागाथा है | यह उपन्यास भयानक मानसिकता को उद्घाटित करनेवाला एक महाप्रभियोग है तथा इसमें दलित वर्ग की दारूण पीड़ा को चित्रित किया है | राष्ट्रीय महत्त्व की महान शिक्षा-संस्थाओं में किसी तरह का प्रमाणपत्र प्राप्त करनेवाले साधनहीन और तथाकथित जातिहीन छात्रों की त्रासदी, उबलते तेल में डाल दिये जानेवाले व्यक्ति के संत्रास की तरह होती है जो इस उपन्यास के रूप में प्रस्तुत हुआ है | राष्ट्रीय स्तर पर ऊँच-नीच और छुआछूत का विष फैला हुआ था | आरक्षणवादी नीतियों के बावजूद इन्सान को जिस अमानवीय स्थिती का सामना करना पड़ता है, वह हर एक को अपने गिरेबान में झाँकने के लिए मजबूर करती है | उपन्यास से पता चलता है कि अपनी मुक्ति की लड़ाई लड़नेवाला हर पात्र एक जैसे दबाव में जीने के लिए मजबूर है जो उसे मर जाने के लिए बाध्य करता है या फिर संघर्ष को तेज करने की चुपचाप प्रेरणा देता है | इस उपन्यास में लेखक ने भारतीय दलित वर्ग की तमाम त्रासदी एवं मानवीय आवश्यकताओं को विश्लेषित और निर्धारित करने का प्रयास किया है | यह उपन्यास आय.आय.टी. शिक्षा संस्था पर केंद्रित है | प्रशासन, राजनीति, शिक्षा, धर्म, समाज आदि सभी क्षेत्रों में अनुसूचित वर्ग की प्राप्त पीड़ा, यातना एवं प्रताड़नाओं का यथार्थ चित्रण किया है | गिरिराज किशोर कहते हैं - "अनुसूचित कोई जाति नहीं, मानसिकता है | जिसे अभिजात वर्ग परे ढ़केल देता है, वह अनुसूचित हो जाता है |"[१]

उपन्यास के आरंभ में अनुसूचित वर्ग के बावनदास अपने पुत्र अनुकूल को ऊँचे शिक्षा संस्था आय.आय.टी. में प्रवेश की ख्वाईश रखता है | बावनदास एक दलित चेतित पात्र है | उसने जो पीड़ा सहन की है, वह अपने बेटे को सहने नहीं देना चाहता | बावनदास अपने प्रांत के एम.पी. मंगलसिंह चौधरी से मिलकर उनसे सहायता की अपेक्षा करता है | उनकी सहायता से अनुकूल को आय.आय.टी. में प्रवेश मिलता है |

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, मुखपृष्ठ से उद्धृत

इस उपन्यास का केंद्रिय पात्र रामउजागर है जिसके इर्द-गिर्द सारी घटनाएँ घटित होती है | यह सुबरन चौधरी का एकलौता पुत्र है | वह भी इस संस्थान में पढ़ रहा था | वह अत्यंत सम्मानी और होनहार प्रकृति का लड़का है | रामउजागर दलितों का प्रतिनिधित्व करता है | उसके माध्यम से गांधीवादी एवं अम्बेड़करवादी विचार उभर आए हैं | वह सवर्ण की अमानवीय वर्तनों का पर्दाफाश कर देता है | सवर्ण छात्र वह अनुसूचित वर्ग का होने के कारण उससे ईर्ष्या करते हैं | अनुकूल और रामउजागर दोनों गहरे दोस्त हैं | दोनों दलित छात्रों को संगठित कर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते हैं | इस कारण अभिजात्य के पक्षधर खन्ना उनका विरोध करता है | वह अनुकूल को बड़ी भद्दी गाली देते हुए कहता है, "अगर तुम अपनी सीमाओं को समझते हो तो ठीक है ..... नहीं समझते तो समझो | रियाया की स्थिति से उपर उठने में अभी समय लगेगा | अगर हम लोगों की बराबरी करनी थी तो वैसा ही बीज चाहिए था |"[1]

रामउजागर सवर्णों का सक्रिय विरोध, ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहता है | लेकिन अकेले होने के कारण टूट जाता है | गले में फंदा ड़ालकर मरनेवाले मोहन का शव अपने कंधे से तो उतरता है लेकिन चेतना से उतार नहीं पाता | वह सोचता है कि प्रत्येक स्वाभिमानी दलित छात्र का यहाँ यही होना है | मोहन के फाँसी का गहरा प्रभाव रामउजागर पर होता है | वह क्षोभ-प्रतिहिंसा के कारण मानसिक संतुलन खो बैठता है | यद्यपि उसके विचारों से प्रेरित छात्र उसे संभालने का प्रयास करते हैं तथा प्रोत्साहित करते हैं | किंतु अत्याधिक आतंकित होने के कारण वह अपने आपको संभाल नहीं पाता | वह मानसिक सन्निपात का शिकार हो जाता है | संस्थान के अधिकारी मौके का लाभ उठाकर रामउजागर को एक साल के लिए संस्था छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं |

शिक्षा के अधिकांश अधिकारी तथा छात्र दलित छात्रों के मनोबल को तोड़ने का कार्य करते हैं | वे समझते हैं कि जो लोग अब तक टट्टी-पेशाब को सर पर ढोते थे और जूते गाँठते थे, वे उनकी बराबरी करने की हिम्मत करें | इसी वजह से ऐसे बड़े लोग नीच से नीच हरकतों पर उतर आते हैं तथा अन्याय, अत्याचार करते हैं | लेकिन निलम्मा उच्चवर्गीय होने पर

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ क्र . 153

भी इनका साथ देती है | वह तथा अनुकूल मिलकर दलित आंदोलन को दिशा देने का प्रयास करते हैं | रामउजागर गाँव जाने से उसकी जगह अनुकूल ने ली थी | प्रोफेसर मलकानी दलित छात्रों को सहायता करते हैं |

मानसिक रूप से पीड़ित रामउजागर को देखने निलम्मा गाँव जाती है | उसके माता-पिता से मिलकर रामउजागर को संस्था में लौटने के लिए प्रयास करती है | रामउजागर के बारे में निलम्मा अनुकूल से कहती है - "एक बच्चे से ज्यादा राम में कुछ नहीं बचा | असहाय बच्चा तो फिर भी भाता है, लेकिन असहाय होता पुरूष संपूर्ण समाज को अपंग कर देता है ... असहाय होने से बड़ी दयनीयता कोई नहीं है | खास तौर से उस पुरूष के लिए जो दूसरों के लिए सहारा बनने का ख्वाब देखता रहा हो |"[१] अनुकूल के विरोध को मिटाने के लिए उसके साथ मार-पीट की जाती है | उसे जाति के नाम पर जलील किया जाता है | जब रामउजागर संस्था में आता है तो उसका दोस्तों द्वारा डॉक्टरी इलाज किया जाता है | फिर से रामउजागर संस्था में प्रविष्ट होना चाहता है | लेकिन सवर्ण मानसिकता रखनेवाले अधिकारी उसका विरोध करते हैं | प्रोफेसर मलकानी इन अधिकारियों का विरोध करता हैं | लेकिन रामउजागर को अनेक अपमानजनक बातें सुननी पड़ती हैं | उस पर असहनीय आरोप लगाए जाते हैं | उसे जाति के नाम से जलील किया जाता है | इससे वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है | वह सोचता है कि इस अपमान, प्रताड़ना और द्वेष-ईर्ष्या के अंधे कुँए से निकलने का कोई रास्ता ही नहीं है और वह इस अन्याय को उबकर आत्महत्या कर लेता है |

आत्महत्या के पूर्व पिताजी, निलम्मा एवं अनुकूल को चिठ्ठी लिखता है | एक और चिठ्ठी लिखकर जेब में रखता है, उस्में लिखा हुआ था - "मेरा जाना स्वेच्छा से है | गवेषणात्मक है | हालाँकि उसका प्रतिफल दूसरों में बाँट पाना संभव नहीं होगा | किसी घृणा या शिकायत के कारण नहीं, एक आत्मियता और आत्मसंतोष के कारण मेरा केवल एक यही प्रश्न है कि जब यह प्रकृति, जिससे हम सब कुछ पाते हैं, घृणामुक्त हैं तो मनुष्य मुक्त क्यों नहीं ?"[२]

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ क्र.221
2. वही - पृष्ठ क्र.287

रामउजागर के आत्महत्या के बाद बहुत हंगामा मचता है | निलम्मा इस मौत की जाँच के लिए प्रयास करती है | वरिष्ठ प्रशासकीय अधिकारी जाँच के लिए नियुक्त किए जाते हैं | छः महिने बाद जाँच रिपोर्ट आती है | उसमें रामउजागर को खुद की मौत का जिम्मेदार ठहराते हैं और संस्था के अधिकारियों के मत में अपना मत स्पष्ट करते हैं | इस उपन्यास के कथानक के परिशिष्ट में जाँच अधिकारियों का रिपोर्ट तथा रामउजागर के पिता सुबरन चौधरी का पत्र है | जाँच के दौरान सुबरन चौधरी ने जाँच अधिकारियों को पत्र लिखा था - "मैं किसी को दोष नहीं देना चाहता | अपने फूटे भाग्य की हंड़ियों को किसी के सिर फोड़ने से क्या लाभ ..... आपके इस जाँच का खेल देखने आने का तो साहस है न गुँजाईश आखिर मुझे क्या मिलता है ? जो खोना था सो खो चुका |"[१]

❖ **निष्कर्ष :**

अतः कह सकते हैं कि इस उपन्यास में दलितों के प्रति प्राचीन काल से चली आ रही अमानवीय परंपरा तथा उसमें उत्पन्न मानसिक त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है | उन्हें पैतृक व्यवसाय करने के लिए विवश किया जा रहा है | उन्हें उच्च शिक्षा लेने से रोका जा रहा है | रामउजागर, अनुकूल तथा निलम्मा के माध्यम से गांधीवादी तथा अम्बेड़करवादी विचार उभरकर आए हैं | तथा प्रोफेसर मलकानी के रूप में मानवतावादी विचार उभरकर आए हैं | आज शाहू, फूले, अम्बेड़कर, गांधी आदि के प्रयासों से दलितों में चेतना निर्माण हो रही है | अब वे संगठित होकर संघर्ष कर रहे हैं | लेकिन समाज व्यवस्था जो सवर्ण है उन पर अन्याय, अत्याचार के द्वारा अपना आतंक जमाए रखने के प्रयास में है लेखक ने इस उपन्यास से उच्च शिक्षा संस्थानों में जातीयता को जड़ों पर करारा व्यंग्य कसा है तथा इन जड़ों को उखाड़कर फेंकने का संदेश दिया है |

5.1.4. दलित उपन्यासकारों में मोहनदास नैमिशराय जी का योगदान

समकालीन उपन्यासकारों में नैमिशराय जी का योगदान महत्त्वपूर्ण है | जिस प्रकार समकालीन दलित उपन्यासकारों ने दलितों की यातना, प्रताड़ना को स्पष्ट किया है उसी प्रकार

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ क्र.307

नैमिशराय जी ने भी स्पष्ट किया है | फिर भी अन्य दलित उपन्यासकारों की तुलना में उन्होंने दलितों के लिए बहुमोल योगदान दिया है | मोहनदास नैमिशराय जी के समकालीन उपन्यासकारों में कर्दम जी का नाम शीर्षस्थ है | उनके छप्पर उपन्यास में सुक्खा को प्रधान पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है | सुक्खा अपने बेटे चंदन को शहर पढ़ने भेजता है | उस समय पंड़ित, ठाकुर, सेठ-साहुकार आदि उसका विरोध करते हैं | वहाँ सुक्खा चुपचाप अन्याय सहन करता दिखाई देता है | वह पंड़ित तथा ठाकुर की रिरियाकर माफी माँगता है | लेकिन नैमिशराय के मुक्तिपर्व उपन्यास का प्रधान पात्र बंसी चेतीत पात्र है | वह नवाब साहब, जमींदार, ठाकुर आदि का विरोध करता है | वह गुलामी को ठुकराकर अपने बेटे को अध्यापक बनाने का प्रयास करता है | पंड़ित सुक्खा के बेटे चंदन को शहर से वापस बुलाने पर तुला था | वह पंड़ित सुक्खा का अपमान करता है | सुक्खा उसकी माफी माँगता है | लेकिन मुक्तिपर्व का बंसी किसी के सामने झुकता नहीं | वह पंड़ित को घर से ही नहीं तो मोहल्ले से निकाल देना है | पानी प्रसंग के समय सुनीत तथा अन्य छात्र पंड़ित को माफी माँगने के लिए मजबूर करते हैं | सुक्खा चंदन को वापस नहीं बुलाता, इसलिए ठाकुर हरनामसिंह को अपमान लगता है | वह पंचायत बुलाकर फैसला करता है | फैसला था कि उसे कोई मजदूरी न दे, उनको कोई सहायता न करें | उस समय सुक्खा विवश दिखाई देता है | अंत में उसे गाँव छोड़कर दूसरे गाँव जाना पड़ता है | लेकिन बंसी मालिक की गुलामी ठुकराने पर विवश नहीं होता | वह सवर्णों का विरोध करता है तथा अधिक मेहनत लेकर अपने बेटे सुनीत को पढ़ाता है |

कर्दम जी के उपन्यास में चंदन, हरिया आदि नाम शितलता के प्रतीक है | उसमें विद्रोह की भावना नहीं है | दलित साहित्य विद्रोह की माँग करता है | नैमिशराय जी के उपन्यासों में उछाल, सुनीत आदि नाम प्रगतिवाद के प्रर्तक है | उनके नामों से ही क्रांति की अपेक्षा नैमिशराय जी ने की है | 'छप्पर' उपन्यास में कमला एक उपेक्षित पात्र है | उस पर अन्याय होता है तथा उसे कलंकित किया जाता है | उसे न्याय नहीं मिलता तथा वह भी अन्याय के विरूद्ध आवाज नहीं उठाती | वह भागकर शहर में संतनगर में रहती है | नैमिशराय जी के 'वीरांगना झलकारी बाई' में मछरिया एक भंगी पात्र है | वह नारी पूरी तरह से जागृत है | पंड़ित के साथ शादी होने के

बाद राजा तथा प्रजा द्वारा विरोध होता है | लेकिन वह किसी से ड़रती नहीं | जब दरबार में उन्हें देश से निकालने का फैसला सुनाया जाता है, तब वह राजा का विरोध करती है तथा राजा की आँखों में आँखे ड़ालकर बात करती है | कर्दम जी के उपन्यास की नायिका रजनी है | लेखक ने उसके पिता ठाकुर को खलनायक के रूप में प्रस्तुत किया है | नैमिशराय के 'मुक्तिपर्व' उपन्यास की नायिका सुमित्रा है | उसके पिता को लेखक ने परिवर्तनवादी एवं समतावादी दिखाया है | 'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन कभी - कभी निराश दिखाई देता है | आर्थिक स्थिति, कमला का शहीद हो जाना आदि घटनाओं से निराश हो जाता है | लेकिन सुनीत आर्थिक स्थिति, पानी प्रसंग, अध्यापकों का विरोध आदि समय निराश न होकर विद्रोह करता है तथा डटकर उसका मुकाबला करता है |

संजीव जी के 'धार' उपन्यास में मैना एक काल्पनिक पात्र है | वह सिर्फ कोयला खदान के लोगों में क्रांति लाना चाहती है | लेकिन नैमिशराय जी ने झलकारी बाई के जीवन संघर्ष को यथार्थ रूप में अंकित किया है | झलकारी बाई अपने आदमियों में क्रांति लाना चाहती है | साथ में देश में क्रांति की अपेक्षा करती है | कोयला खदान के मजदूर पूँजीपतियों के अत्याचार तथा पीड़ित-शोषित जिंदगी जीने के लिए मजबूर है | लेकिन नैमिशराय जी के उपन्यास के दलित पात्र अन्याय का विरोध करते हैं | वे पंड़ित प्याऊवाले को माफी माँगने के लिए मजबूर करते हैं | बंसी नवाब साहब का खुलेआम विरोध करता है | दलित शराबखाना बंद कर देते हैं | पुलिस से मुठभेड़ भी करते हैं | अंत में न्याय मिलाकर रहते हैं | 'धार' उपन्यास के पात्र अविनाश शर्मा और मैना क्रांति चाहते हैं | उन पर मार्क्सवाद का प्रभाव पूरी तरह से परिलक्षित होता है | लेकिन नैमिशराय के पात्रों पर मार्क्सवाद, गांधीवाद एवं अम्बेड़करवाद के विचारों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है | जब सवर्णों द्वारा दलितों पर जमींदार, नवाब साहब, पंड़ित, पुलिस आदि द्वारा अन्याय होता है तब वे संगठित होकर संघर्ष करते हैं | हमें ऐसा लगता है कि उनमें मार्क्सवाद जोर पकड़ रहा है | सुनीत पर अध्यापक अन्याय, अत्याचार करते हैं | उसे जाति के नाम पर जलील किया जाता है | लेकिन सुनीत अध्यापकों का विरोध नहीं करता | वह उस अन्याय का जवाब अपने तरीके से देना चाहता है | वह परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करता है, जो सवर्ण अध्यापकों को नहीं चाहिए थे |

यहाँ पर सुनीत के माध्यम से गांधीवादी विचार उभरकर आए हैं | सुनीत पर डॉ.अम्बेड़कर जी के विचारों का भी प्रभाव दिखाई देता है | वह शिक्षित बनकर अध्यापक बनता है और समाज को शिक्षित करने का प्रयास भी करता है | वह शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना चाहता है, जो डॉ.अम्बेड़कर के विचारों को प्रभावित करते हैं | मैना कोयला खदान के मजदूरों में क्रांति लाना चाहती है | लेकिन अंत में बुल्ड़ोजर के सामने खड़ी होकर शहीद हो जाती है | नैमिशराय जी के उपन्यास में झलकारी बाई अंग्रेजों के साथ अंत तक संघर्ष करती है | सारी झाँसी तितर-बितर हो गयी थी | उसका पति देश के लिए शहीद हो गया था | इसके बावजूद भी वह घायल शेरनी की तरह लड़ती है | वह अंग्रेजों की छावणी में जाकर उसका विरोध करती है | वहाँ से छूटने के बाद फिर से सेना तैयार करने का प्रयास करती है |

'परिशिष्ट' उपन्यास में बावनदास अपने बेटे को उच्च शिक्षा के प्रवेश दिलाने की ख्वाईश रखता है | इसलिए एम.पी. मंगलसिंह चौधरी से सहायता की अपेक्षा करता है | उसे एम.पी. के सामने झुकना पड़ता है | रामउजागर के पिता सुबरन चौधरी अपने बेटे की मौत पर निराश दिखाई देते हैं | वह उसके बेटे को न्याय देने के बजाए पीछे हटते हैं | वह जाँच अधिकारी को विवश होकर पत्र लिखते हैं | लेकिन नैमिशराय के उपन्यास में बंसी स्वाभिमानी दिखाई देता है | वह किसी के आगे झुकता नहीं | वह कभी निराश दिखाई नहीं देता | वह अपने बेटे सुनीत को बराबर मार्गदर्शन करता है तथा हर संकट में साथ रहता है |

रामउजागर सवर्णों का सक्रिय विरोध करना चाहता है | लेकिन अकेला होने के कारण टूट जाता है | लेकिन सुनीत सवर्णों का विरोध करते समय ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहता है | वह अकेले भी लड़ता है और समाज को साथ लेकर भी | वह कभी टूटता नहीं | वह सवर्ण अध्यापक का जवाब अपने तरीके से देना चाहता है | वह प्याऊवाले पंड़ित का विरोध करते समय समाज को साथ लेकर विरोध करता है | निलम्मा 'परिशिष्ट' उपन्यास में प्रधान नारी पात्र है | वह रामउजागर की सहेली है | वह आंदोलन में सक्रिय रहती थी | लेकिन रामउजागर की दिमागी हालत खराब होने पर सहायता तो करती है लेकिन अंत में निराश होकर आंदोलन छोड़कर अध्यापक बन जाती है | लेकिन सुनीत की सहेली सुमित्रा इस प्रकार साथ छोड़कर नहीं जाती | वह

हर समय उसका साथ देती है | वह हर सुख-दुख में सदैव साथ रहती है | अंत में अध्यापक बनकर उसी के स्कूल में आती है तथा उसके कार्य में सदैव सहयोग देने का प्रयास करती है | 'परिशिष्ट' में उच्च शिक्षा लेने के बजाए सवर्ण दलितों को पैतृक व्यवसाय करने के लिए मजबूर करते हैं | अनुकूल को मार-पीट होने पर भी उसका विरोध नहीं करता | अनुकूल को मार-पीटकर पैतृक व्यवसाय करने की धमकी देना इसका सार्थक उदाहरण है | नैमिशराय जी के उपन्यासों में भी सवर्ण दलितों को पैतृक व्यवसाय करने के लिए मजबूर करते हैं | लेकिन नैमिशराय के दलित पात्र इसका विरोध करते हैं | बंसी नवाब साहब की गुलामी ठुकरा देना इसका सार्थक उदाहरण है | रामउजागर को अध्यापक तथा अधिकारी विरोध करते हैं | इस कारण उसकी दिमागी हालत खराब हो जाती है | अंत में निराश होकर आत्महत्या कर लेता है | सुनीत को भी अध्यापकों का विरोध सहना पड़ा था | लेकिन सुनीत अध्यापक का जवाब अपने तरिके से देता है | वह कभी निराश नहीं होता | अंत में अध्यापक बनकर समाज कार्य करने में कार्यरत रहता है |

❖ निष्कर्ष :

अत: कह सकते हैं कि समकालीन उपन्यासकारों में नैमिशराय जी का योगदान महत्वपूर्ण है | जिस प्रकार समकालीन दलिन उपन्यासकारों ने दलितों की यातना, प्रताड़ना को स्पष्ट किय है उसी प्रकार नैमिशराय जी ने भी स्पष्ट किया है | फिर भी अन्य दलित उपन्यासकारों की तुलना में उन्होंने दलितों के लिए बहुमोल योगदान दिया है | उनके उपन्यासों में दलित समस्याओं के साथ चेतना भी कूट-कूटकर भरी हुई दिखाई देती है | उनके पात्र विवश होकर किसी के सामने माफी नहीं माँगते | वे किसी की गुलामी नहीं करते | वे अन्याय का संगठित होकर प्रतिकार करते हैं | वह पैतृक व्यवसाय करने का विरोध करते हैं | उनके उपन्यासों पर मार्क्सवाद, गांधीवाद एवं अम्बेड़करवाद का प्रभाव पूरी तरह से परिलक्षित होता है | नैमिशराय अपने उपन्यासों से समाज में परिवर्तन की अपेक्षा करते हैं | कहना सही होगा कि समकालीन उपन्यासकारों की अपेक्षा नैमिशराय आगे हैं | जिससे भारतीय दलित समाज पूरी तरह से लाभान्वित होगा इसमें संदेह नहीं है |